पद ३०६

(राग: जोगिया - ताल: त्रिताल)

आम्ही केवळ क्रियाभ्रष्ट ।।ध्रु.।। सख्या मायेशीं गमन करितों। भगिनीरततों स्ष्ट।।१।। माणिक म्हणे अक्रियेनें चालू। परी जगासी श्रेष्ठ।।२।।